

१. कह कविराय

-गिरिधर

संभाषणीय

विपत्ति में ही सच्चे मित्र की पहचान होती है, स्पष्ट कीजिए :-
कृति के लिए आवश्यक सोपान :

- विद्यार्थियों से उनके मित्रों के नाम पूछें ।
- विद्यार्थी किसे अपना सच्चा मित्र मानते हैं, बताने के लिए कहें ।
- किन-किन कार्यों में मित्र ने उनकी सहायता की है, पूछें ।
- विद्यार्थी अपने-अपने मित्रों के सच्चे मित्र बनने के लिए क्या करेंगे, बताने के लिए प्रेरित करें ।

गुन के गाहक सहस नर, बिन गुन लहै न कोय ।
जैसे कागा-कोकिला, शब्द सुनै सब कोय ॥
शब्द सुनै सब कोय, कोकिला सबै सुहावन ।
दोऊ के एक रंग, काग सब भये अपावन ॥
कह गिरिधर कविराय, सुनौ हो ठाकुर मन के ।
बिन गुन लहै न कोय, सहस नर गाहक गुन के ॥

देखा सब संसार में, मतलब का व्यवहार ।
जब लागि पैसा गाँठ में, तब लागि ताको यार ॥
तब लागि ताको यार, यार सँग ही सँग डोलै ।
पैसा रहा न पास, यार मुख से नहि, बोलै ॥
कह गिरिधर कविराय, जगत का ये ही लेखा ।
करत बेगरजी प्रीति, मित्र कोई बिरला देखा ॥

झूठा मीठे वचन कहि, ऋण उधार ले जाय ।
लेत परम सुख ऊपजै, लैके दियो न जाय ॥
लैके दियो न जाय, ऊँच अरु नीच बतावै ।
ऋण उधार की रीति, माँगते मारन धावै ॥
कह गिरिधर कविराय, जानि रहै मन में रूठा ।
बहुत दिना हो जाय, कहै तेरो कागज झूठा ॥

परिचय

जन्म : एक अनुमान के अनुसार इनका जन्म १७१३ ई. में हुआ था ।

परिचय : गिरिधर की कुंडलियाँ बहुत प्रसिद्ध हैं । इन्होंने नीति, वैराग्य और अध्यात्म को ही अपनी रचनाओं का विषय बनाया है । जीवन के व्यावहारिक पक्ष का इनकी रचनाओं में प्रभावशाली वर्णन मिलता है ।

प्रमुख कृतियाँ : 'गिरिधर कविराय ग्रंथावली' में ५०० से अधिक दोहे और कुंडलियाँ संकलित हैं ।

पद्य संबंधी

कुंडली : यह दोहा और रोला के मेल से बनती है । कुंडली में दोहा के अंतिम पद को रोला का पहला चरण बनाना होता है । कुंडलियों की एक विशेषता यह है कि यह जिस शब्द से शुरू होती है उसी से इसका समापन भी होता है ।

यहाँ कुंडलियों के माध्यम से विविध सामाजिक गुणों को अपनाने की बात की गई है ।

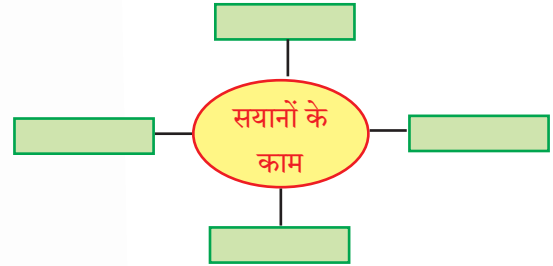
बिना विचारे जो करै, सो पाछै पछताय ।
काम बिगारै आपनो, जग में होत हँसाय ॥
जग में होत हँसाय, चित्त में चैन न आवै ।
खान-पान-सनमान, राग-रंग मनहि न भावै ॥
कह गिरिधर कविराय, दुख कछु टरत न टारे ।
खटकत है जिय माँहि, कियो जो बिना विचारे ॥

बीती ताहि बिसारि दे, आगे की सुधि लेइ ।
जो बनि आवै सहज में, ताही में चित देइ ॥
ताही में चित देइ, बात जोई बनि आवै ।
दुर्जन हँसे न कोय, चित्त में खता न पावै ॥
कह गिरिधर कविराय यहै करु मन परतीती ।
आगे की सुधि लेइ, समझु बीती सो बीती ॥

* पानी बाढ़ो नाव में, घर में बाढ़ो दाम ।
दोनों हाथ उलीचिए, यही सयानो काम ॥
यही सयानो काम, राम को सुमिरन कीजै ।
परस्वास्थ्य के काज, शीस आगे कर दीजै ॥
कह गिरिधर कविराय, बडेन की याही बानी ।
चलिए चाल सुचाल, राखिए अपनो पानी ॥

— ० —

सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :
(१) संजाल :



(२) उत्तर लिखिए :

(क) अपना शीस इसके लिए आगे करना चाहिए तो इसकी प्राप्ति होगी

(ख) बड़ों के द्वारा दी गई सीख -

(३) 'हाथ' शब्द पर प्रयुक्त कोई एक मुहावरा लिखकर उसका वाक्य में प्रयोग कीजिए ।

(४) 'खुशियाँ बाँटने से बढ़ती हैं' इसपर अपना मत स्पष्ट कीजिए ।

श्रवणीय

संत कबीर तथा कवि बिहारी के नीतिपरक दोहे सुनिए और सुनाइए ।

पठनीय

मीरा का कोई पद पढ़िए ।

शब्द संसार

सहस्र (सं.पुं.) = सहस्र	विरला (वि.) = निराला
दोऊ (वि.) = दोनों	लैके (क्रिया.) = लेकर
ताको (सर्व.) = उसको	अरु (अ.) = और
लेखा (पुं.सं.) = व्यवहार	टारना (क्रिया.) = टालना
बेगरजी (वि.फा.) = निस्वार्थ	परतीती (स्त्री.सं.) = प्रतीति, विश्वास



आसपास

भक्तिकालीन, रीतिकालीन कवियों के नाम और उनकी रचनाओं की सूची तैयार कीजिए ।

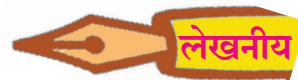


कल्पना पल्लवन

‘गुन के गाहक सहस्र नर’ इस विषय पर अपने विचार स्पष्ट कीजिए ।



पाठ के आँगन में



लेखनीय

सामाजिक मूल्यों पर आधारित पद, दोहे, सुवचन आदि का सजावटी सुवाच्य लेखन कीजिए ।

(१) सूचना के अनुसार कृतियाँ पूर्ण कीजिए :-

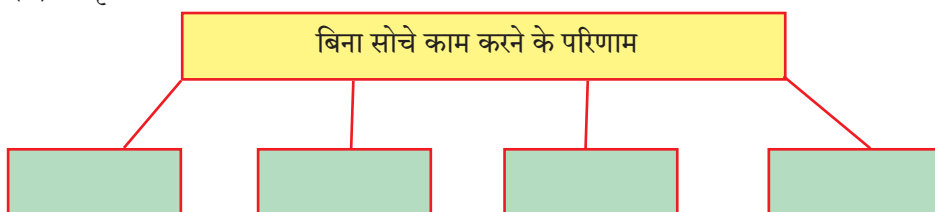
(क) कौआ और कोकिल में समानता तथा अंतर :

	समानता	अंतर	कवि की दृष्टि से
कौआ			
कोकिल			

(ख) कवि की दृष्टि से मित्र की परिभाषा-

- (१)
- (२)
- (३)
- (४)

(ग) आकृति



पाठ से आगे

‘बीती ताहि बिसारि दे, आगे की सुधि लेइ’, कवि के इस कथन की हमारे जीवन में सार्थकता स्पष्ट कीजिए।

(२) कविता में प्रयुक्त तत्सम, तद्भव, देशज शब्दों का चयन करके उनका वर्गीकरण कीजिए तथा पाँच शब्दों का वाक्य में प्रयोग कीजिए ।

(३) कवि के मतानुसार मनुष्य की विचारधारा निम्न मुद्दों के आधार पर स्पष्ट कीजिए :

(च) ऋण लेते समय

(छ) ऋण लौटाते समय



8HZQ3V



रचना बोध

.....

